बौद्ध साहित्य का आर्थिक आयाम

डॉ0 रवि रंजन कुमार

बौद्ध शिक्षा के आर्थिक प्रबंधन में राज्य का योगदान सर्वोपरि था। शिक्षा को राजकीय संरक्षण प्राप्त था। अशोक ने अपने संपूर्ण साम्राज्य में कई मठ, संघ तथा प्रस्तर लेख स्थापित कर शिक्षा को बढ़ावा दिया। उसने केवल काश्मीर में पाँच सौ मठ बनवाए जिसमें हवेनसांग ने सौ के देखने की बात कही है। मिलिन्दपञ्हो से हमें जानकारी मिलती है कि राजा शिल्पी, कारीगरों को प्रोत्साहन देते थे।

उत्तर एवं मध्य भारत में सातवाहन, शक एवं कुषाण राजाओं ने अनेक मठ बनाए। कनिष्क विद्वानों का आश्रयदाता था। प्रसिद्ध बौद्ध विद्वान नार्गार्जुन अश्वघोष, वसुमित्र और प्रख्यात वैद्य चरक को संरक्षण प्राप्त था। इसी प्रकार गुप्त राजाओं ने भी विद्वानों को अपनी सेवा प्रदान की। प्रसिद्ध बौद्ध विद्वान बसुबंधु गुप्तकाल में हुए थे। वाणभट्ट के अनुसार हर्ष ने विद्वानों की मदद की और अपने राज्य की नीति बना ली थी कि राजा की भूमि से प्राप्त राजस्व का चौथ हिस्सा उच्च बौद्धिक ख्याति के लिए पारितोषिक रूप में दिया जाए। जातकमाला की रचना उसके प्रोत्साहन का फल है।